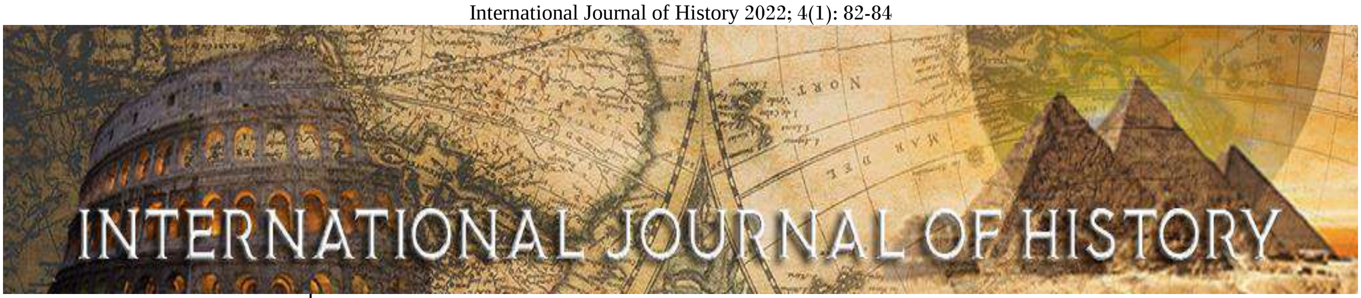

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2022; 4(1): 82-84
Received: 10-11-2021
Accepted: 16-12-2021

श्वेता कश्यप
शोधार्थी, इतिहास विभाग, एन. आई. आई. एल. एम. विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा भारत

Corresponding Author:
श्वेता कश्यप
शोधार्थी, इतिहास विभाग, एन. आई. आई. एल. एम. विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा भारत

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जाति व्यवस्था का एक अध्ययन

श्वेता कश्यप

सारांश
डॉ. अम्बेडकर ने दलितोत्थान हेतू जितने भी सुझाव दिए थे वे सभी काफी गम्भीर तथा उपयोगी किस्म के थे। वे संविधान निर्माता के साथ–साथ प्रबुद्ध चिंतक एवं महान समाजशास्त्री भी थे । उन्होंने समाज में व्याप्त सभी बुराईयों को चुनौती दी बल्कि उनको समाप्त करने के लिए हर संभव प्रयास किया । बाबा साहेब समानता व भाईचारे पर आधारित समाज का निर्माण करना चाहते थे । उनका अटूट विश्वास था कि जब भारत में मौजूद सभी वर्ग एक साथ व एक भावना के साथ आगे बढ़ेंगे तभी भारत एक राष्ट्र के रूप में विश्व मंच पर स्थापित हो पाएगा।

मुख्य शब्दः जाति व्यवस्था, शारीरिक शोषण।

प्रस्तावना
राष्ट्रवाद तभी औचित्य ग्रहण कर सकता है जब लोगों के बीच जाति, नस्ल या रंग का अन्तर भुलाकर उनमें सामाजिक भ्रातृत्व को सर्वोच्च स्थान दिया जाए ।–डॉ॰ बी॰ आर॰ अम्बेडकर
प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध में हमने डॉ॰ बी॰ आर॰ अम्बेडकर के भरतीय समाज में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करने का प्रयास किया है। डॉ॰ बी॰ आर॰ अम्बेडकर ने भारतीय समाज का न सिर्फ सूक्ष्मता से अध्ययन ही किया बल्कि शोध के द्वारा उसे विद्वान् जगत के समक्ष प्रस्तुत भी किया है ।
भारतीय सामाजिक व्यवस्था अत्यन्त जटिल थी । समाज में अनेक प्रकार के विभाजन विद्यमान थे । इन सबमें सबसे बड़ा विभाजन था जाति व्यवस्था। यह विभाजन निम्नवर्गीय व्यक्तियों का न केवल शारीरिक शोषण करता था अपितु मानसिक शोषण भी करता था । समाज में जाति व्यवस्था न सिर्फ दयनीय थी बल्कि देश के विकास में एक बड़ी बाधा भी थी हालांकि समय–समय पर समाज सुधारकों द्वारा इसमें सुधार के लिए प्रयास किए जाते रहे थे, लेकिन यह व्यवस्था भारतीय जनमानस की गहराईयों में इतनी गहरी जड़ बना चुकी थी कि इतनी आसानी से उखाड़ फैंकना आसान न था । इसी दिशा में डॉ॰ बी॰ आर॰ अम्बेडकर द्वारा एक सार्थक शुरूआत की गई ।

डॉ. अम्बेडकर के द्वारा भारतीय समाज का विश्लेषण
भारतीय समाजिक व्यवस्था काफी हद तक जड़तापूर्ण थी । कार्ल मार्क्स के अनुसार अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारतीय सामाजिक ढांचा सड़ा गला एवं जर्जर था । तत्कालीन भारतीय समाज की मुख्य विशेषता थी । जाति–व्यवस्था और जाति व्यवस्था ने भारतीय सामाजिक जीवन को इतना प्रभावित कर रखा था कि सामुदायिक, वर्गीय एवं राष्ट्रीय विचारों का अस्तित्व में आना असम्भव प्रतीत हो रहा था ।[1]
ऐसी विषम सामाजिक परिस्थितियों में डॉ॰ बी॰ आर॰ अम्बेडकर का जन्म भारत के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना माना जाता है । दलित परिवार में जन्म लेने के कारण भीमराव को बचपन से ही इन सामाजिक विषमताओं का सामना करना पड़ा । छुआछूत का प्रहार इतना भीषण था कि इसका एहसास अम्बेडकर को छात्र जीवन में ही हो गया था। भीमराव ने जगह–जगह अपमान के कड़वे घूंट पिए और असुविधाओं के सामने भी घूटने नहीं टेके । उन्होंने मन लगाकर पढ़ाई करी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त की ।[2]
उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वह विदेश भी गए । इस प्रकार डॉ॰ अम्बेडकर ने एम॰एस॰सी॰, एम॰ ए॰, पी एच॰ डी॰, डी॰ एस॰ पी॰ व बार एट्लॉ की उपाधियां प्राप्त की । इसके बाद वे भारत में अपनी जन्म भूमि पर वापस आ गए । डॉ॰ बी॰ आर॰ अम्बेडकर हिन्दू समाज में सुधार कर उसे सही दिशा देने का निश्चय किया । उन्होंने समाज का पुर्नमूल्यांकन कर यह निष्कर्ष निकाला कि समाज में दलित पिछड़ी जातियों एवं महिलाओं की स्थिति सबसे खराब है। उन्होंने अपना सारा ध्यान इन वर्गों के उत्थान एवं सेवा में लगाने का निश्चय किया।

डॉ॰ अम्बेडकर के अनुसार जाति व्यवस्था की जड़े प्राचीनकालीन वर्ण व्यवस्था में निहित थी। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में समाज का एक वर्ग जो सदियों से उपेक्षा का शिकार रहा था । उसे हर प्रकार के अधिकारों से वंचित रखा गया । समाज में उन्हें शैक्षिक, राजनैतिक एवं धार्मिक अधिकार प्राप्त नहीं थे । मेक्सवेबर ने भी लिखा है कि हिन्दू धर्म दरअसल जादू, अन्धविश्वास और अध्यात्मवाद की खिचड़ी बन कर रह गया था।[3]

ऐतिहासिक काल से ही दलित समाज पर अनेक प्रकार की निर्योगताएं थोपी गई थी तथा हिन्दू समाज में उन्हें निम्न स्तर पर रखा गया था। दलित समाज पर थोपी गई निर्योगताएं इस प्रकार थी– दलितों को पूरे भारत में तथाकथित उच्च वर्ण के लोगों के लिए अस्पृश्य माना जाता था अर्थात् उनका छूना हिन्दुओं की पवित्रता को नष्ट कर देता था।

दलित जातियों को गांवों में विशेषकर खेतों में कृषि–दासों के रूप में बेगार करनी पड़ती थी। उन्हें जमीन पर मालिकाना हक प्रदान नहीं किया जाता था।

दलितों को मन्दिरों में प्रवेश की मनाही थी, इसी तरह अन्य सार्वजनिक स्थानों–कुओं, बसों, मदरसों, रेलगाड़ियों इत्यादि का प्रयोग करने का अधिकार नहीं था। संक्षेप में दलितों को सभी प्रकार के नागरिक, राजनैतिक व सार्वजनिक अधिकारों से वंचित रखा गया था।

उपरोक्त निर्योग्ताएं दलितों को हिन्दुओं के समाज, संस्कृति धर्म आदि इन सब से अलग करती है व उन्हें हिन्दुओं की संस्कृति से अलग अपनी ही साम्प्रदायिक संस्कृति में जीने के लिए मजबूर करती है। [4]

सामाजिक–राजनैतिक जागृति के बाद भारत में सामाजिक व राजनैतिक सुधारों का एक सिलसिला शुरू हो गया लेकिन जाति के मामले में उनका दृष्टिकोण दुविधापूर्ण था। सम्भवतः जाति व्यवस्था का सबसे सशक्त विरोध निचली जातियों के बीच से उभरे आन्दोलनों ने ही किया। ज्योतिराव फूले और नारायण गुरु इस व्यवस्था के जबरदस्त आलोचक थे। नारायण गुरु ने ही यह आह्वान किया था–

"मानव मात्र के लिए एक धर्म एक जाति और एक ईश्वर"[5]

डॉ॰ बी॰ आर॰ अम्बेडकर के अनुसार हिन्दू समाज संगठन में अनेक विलक्षणताएं विद्यमान थी। जाति विषयक अवधारणा को समझने के लिए पाठकों को उन कुछ बुनियादी संकल्पनाओं से परिचित कराना आवश्यक है, जो हिन्दू समाज–संगठन में निहित हैं। हिन्दुओं में प्रचलित समाज संगठन की मूल संकल्पना उस वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति से प्रारंभ होती है, जिसके बारे में विश्वास किया जाता है कि उससे हिन्दू समाज का विभाजन हुआ । ये चार वर्ण है– (1) ब्राह्मण, पुजारी और शिक्षक वर्ग (2) क्षत्रिय, सैनिक वर्ग (3) वैश्य, व्यापारी वर्ग और (4) शूद्र दास वर्ग । कुछ काल तक वे केवल वर्ग थे । कुछ काल बाद जो केवल वर्ग (वर्ण) थे, वे जातियां बन गई । चार जातियां अथवा वर्ण चार हजार जातियां बन गई । इस प्रकार आधुनिक जाति–व्यवस्था प्राचीन वर्ण व्यवस्था का ही विकसित रूप है।[6]

सामाजिक असमानता के इस स्वरूप को जिसमें ऊंची–नीची स्थितियां वाले विभिन्न सामाजिक समूह असमान अधिकार और सुविधाएं प्राप्त करते हैं और सामाजिक अभिमति से प्रयुक्त आदेशों के आधार पर एक–दूसरे को ऊंचा–नीचा मानकर अन्तःक्रिया करते हैं को सामाजिक स्तरीकरण कहते हैं । सामाजिक स्तरीकरण के एक विशिष्ट मॉडल का नाम जाति व्यवस्था है।[7]

डॉ॰ अम्बेडकर ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था का गहन अध्ययन किया और कहा कि इसमें लोकतन्त्र के लिए कोई स्थान नहीं है। इसमें स्वतन्त्रता के लिए कोई स्थान नहीं । इसमें मातृत्व के लिए कोई स्थान नहीं । यह स्पृश्यों का गणतन्त्र था जो अस्पृश्यों पर स्थापित एक विशाल साम्राज्य था । यह हिन्दुओं का एक प्रकार का उपनिवेशवाद था, जो अस्पृश्यों का शोषण करने के लिए था। इस तरह उन्होंने यह स्थापित किया कि भारतीय समाज में सबसे गहराई वाले साम्प्रदायिक विभाजन अस्पृश्यों और स्पृश्यों के बीच है जो कि सामाजिक स्तरीकरण के घृणित स्वरूप अस्पृश्यता की संस्था का परिणाम है।[8]

डॉ॰ बी॰ आर॰ अम्बेडकर एक समाज सुधारक के साथ–साथ एक महान् चिन्तक भी थे। भारत में डॉ॰ बी॰ आर॰ अम्बेडकर की छवि एक संविधान निर्माता तथा दलितों के मसीहा के रूप में उभरी, लेकिन वास्तविक में बाबा साहेब एक उच्च कोटि के विचारक थे उन्होंने समाज में व्याप्त अनेक बुराईयों पर गहनता से चिन्तन किया तथा उनके समाधान हेतू अपने विचारों से लोगों को अवगत कराया। अपने सामाजिक चिन्तन में उन्होंने बताया कि हिन्दू समाज जाति व्यवस्था पर आधारित असमानता एवं शोषण का प्रतीक बनकर रह गया है। वर्ण व्यवस्था ने समाज मे छुआछूत को स्थापित किया है तथा यह व्यवस्था मानवता के लिए अभिशाप बन कर रह गयी है।[9]

अपनी पुस्तक 'जाति–भेद का विनाश' के माध्यम से उन्होंने लोगों को चेताया कि जब तक जाति व्यवस्था को समाप्त नहीं किया जाता तब तक हिन्दू समाज का सुधार एवं विकास असम्भव है। जाति व्यवस्था ने हिन्दू समाज को शक्तिहीन व कमजोर बना दिया है। यही कारण है कि इतने वर्षो से हिन्दू गुलामी का जीवन जीने के लिए मजबूर हैं। [10]

अम्बेडकर के अनुसार जाति व्यवस्था ने हिन्दू समाज में बंधुभाव को लगभग समाप्त कर दिया है। उन्होंने इसके लिए हिन्दू धर्म और उसके दर्शन को दोषी पाया। डॉ॰ अम्बेडकर ने हिन्दू धर्म दर्शन का गहन अध्ययन किया और कहा कि हिन्दू धर्म में असमानता एक स्वीकृत धार्मिक सिद्धान्त था और उसे जान–बूझकर एक धर्म मत के रूप में प्रचारित–प्रसारित किया जाता रहा था। जाति–व्यवस्था एक अधिकृत धार्मिक तत्व था और कोई भी सरेआम उसका पालन करने में लज्जा अनुभव नहीं करता था। इस प्रकार अम्बेडकर ने यह निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक स्तरीकरण पर आधारित हिन्दू समाज व्यवस्था काफी गहरे ऐतिहासिक आधार रखती थी। इसकी ऐतिहासिक जड़े प्राचीन हिन्दू धर्म दर्शन में फैली थी जिसे काफी हद तक मनु ने व्यवस्थित कानूनी और संस्थागत रूप दिया था। यह धर्म दर्शन मूलतः समानता, स्वतन्त्रता एवं बंधुत्व तीनों ही के खिलाफ था और उसका मूल मन्त्र असमानता का सिद्धान्त था, जो कि वर्ण व्यवस्था में निहित था और उसने जाति की संस्था के रूप में जटिलतम और विकृत रूप धारण कर लिया था।[11]

दलितों के उत्थान हेतु सुझाव

डॉ॰ अम्बेडकर के अनुसार समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक हर स्तर पर गुलामी का जीवन जीने के लिए मजबूर हैं । भारतीय समाज संवेदनहीन हो चुका था । कोई भी समाज तब तक विकास नहीं करता जब तक कि उसमें स्थित सभी वर्गों की समान भागेदारी एवं समान अवसर प्राप्त नहीं होते ।

1920 में अम्बेडकर ने 'मूक नायक' नामक पत्र के माध्यम से जाति व्यवस्था पर तीखा प्रहार किया । समाज के दलित एवं शोषित वर्गों को जागरूक करने के उद्देश्य से उन्होंने एक मरणि पत्रिका 'बहिष्कृत भारत' की शुरूआत की । इस पत्रिका में अपने लेखों के माध्यम से उन्हांने समाज में एक नवीन चेतना का प्रचार प्रसार किया।[12]

दलित समस्या के हल तथा दलितोत्थान के लिए डॉ॰ अम्बेडकर हिन्दू समाज की बुराई अस्पृश्यता को ही समाप्त नहीं करना चाहते थे । बल्कि वह जाति व्यवस्था को भी पूरी तरह से समाप्त करना जरूरी समझते थे । उनका मानना था कि अन्तर्जातीय भोज और अन्तर्जातीय विवाह का संयोजन एक आन्दोलन के आधार पर करना समाज में समानता स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण

भूमिका निभा सकते है।[13]

डॉ० अम्बेडकर के अनुसार दलित समाज अस्पृश्य होने के साथ–साथ सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक हर स्तर पर गुलामी का जीवन व्यतीत कर रहा था । उन्होंने दलितों की दशा को सुधारने के लिए बहुत संघर्ष किया और अपने संघर्ष के दौरान दलितों के उत्थान हेतू निम्नलिखित सुझाव दिए–

1. दलित वर्गों की शिक्षा को प्रांत के राजस्व पर प्रथम प्रभार के रूप में मान्यता दी जाए और शिक्षा के कुल अनुदान का एक समुचित और न्यायोचित अनुपात अलग से दलित वर्गों के हितों के लिए रखा जाए ।
2. जाति के किसी बन्धन के बिना दलितों की थल सैना, नौ सेना व पुलिस में बिना रोक टोक उनकी भर्ती की जाए ।
3. प्रस्तीय सरकार स्थानीय निकायों में दलित वर्गों के प्रभावी प्रतिनिधित्व के अधिकार को मान्यता दी जाए ।[14]
4. दलितों को रोजाना की गुलामी व अत्याचारों से मुक्ति दिलाने हेतू पृथक दलित गांव या बस्तियां बसाने की मांग की जिसमें उन्हें निर्धनता, बेचारी व जिल्लत से मुक्ति मिल सके ।[15]
5. अछूतों के प्रति अत्याचार, बहिष्कार व भेदभाव सभी के विरूद्ध सख्त व दण्डनीय कानून बनाए जाए ।
6. दलितों को वास्तविक अल्पसंख्यक का दर्ज देते हुए उनके लिए विशेष अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व को उन्होंने राष्ट्रवाद के मार्ग में काई बाधक नहीं समझा ।[16]
7. डॉ० अम्बेडकर ने दलित उत्थान के लिए राजनैतिक ताकत या हिस्सेदारी को जरूरी समझा । वस्तुतः उनका सारा राजनैतिक संघर्ष सबसे अधिक दलितों के राजनेतिक उत्थान के लक्ष्यों से जुड़ा था । गोलमेज सम्मेलन से लेकर संविधान सभा तक हर अवसर पर उन्होंने राजनैतिक प्रतिनिधित्व हासिल करने के प्रयास किए । वे राजनैतिक शक्ति को तमाम क्षेत्रों में उन्नति का जरिया मानते थे ।
8. हिन्दू धर्म की रूढ़िवादिता एवं सुधार की सम्भावना को देखते हुए उन्होंने अपने अन्तिम दिनों में धर्म–परिवर्तन का मार्ग सुझाया एवं दलितों को बौद्ध धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया।[17]

डॉ० अम्बेडकर लंदन के बाद कनाडा आये फिर सारे यूरोप को उन्होंने दलित वर्गों की हालत एवं समस्याओं को बाबत जानकारी उपलब्ध करवाई । इस तरह उन्होंने उनकी समस्या का अन्तर्राष्ट्रीयकरण किया ताकि समूची मानवता का इस समस्या की गम्भीरता की ओर ध्यान जा सके । ऐसा करना इसलिए भी जरूरी था क्योंकि केवल हिन्दू लोग ही नहीं अपितु भारत की ब्रिटिश सरकार उनके उत्थान हेतू उनके सुझाव उपायों को स्वीकार कर ले। डॉ० बी० आर० अम्बेडकर के प्रयासों के परिणामस्वरूप सरकार ने दलितों को राजनैतिक प्रतिनिधित्व प्रदान किया । शिक्षा व नौकरी में आरक्षण जैसे प्रावधानों के द्वारा दलितों की स्थिति सुधारने का प्रयास भी किया गया ।

निष्कर्ष

अतः सिद्ध होता है कि डॉ० अम्बेडकर ने दलितोत्थान हेतू जितने भी सुझाव दिए थे वे सभी काफी गम्भीर तथा उपयोगी किस्म के थे । वे संविधान निर्माता के साथ–साथ प्रबुद्ध चिंतक एवं महान समाजशास्त्री भी थे । उन्होंने समाज में व्याप्त सभी बुराईयों को चुनौती दी बल्कि उनको समाप्त करने के लिए हर संभव प्रयास किया । बाबा साहेब समानता व भाईचारे पर आधारित समाज का निर्माण करना चाहते थे । उनका अटूट विश्वास था कि जब भारत में मौजूद सभी वर्ग एक साथ व एक भावना के साथ आगे बढ़ेंगे तभी भारत एक राष्ट्र के रूप में विश्व मंच पर स्थापित हो पाएगा।

भारत रत्न डॉ० अम्बेडकर एक स्वतन्त्र विचारक, दलित उद्धारक एवं भारत की महान विभूति थे । उनके निधन पर पं० जवाहर लाल नेहरु ने कहा था –

"बाबा साहेब डॉ० अम्बेडकर हिन्दू समाज की तमाम दमनकारी व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह के प्रतीक थे ।"

संदर्भ

1. धनन्जय कीर, डॉ० अम्बेडकर : लाइफ एण्ड मिशन, पृ० 3–4
2. डब्ल्यू. एन० कुबेर, आधुनिक भारत के निर्माता डॉ० अम्बेडकर, पृ० 11
3. धनन्जय कीर, डॉ० अम्बेडकर : लाइफ एण्ड मिशन, पृ० 1–3
4. उपरिवत्, पृ० 277–285
5. उपरिवत्, पृ० 53–54
6. बाबा साहब डॉ० अम्बेडकर : संपूर्ण वाङ्मय, खण्ड 10, पृ० 52
7. उपरिवत्, पृ० 41–42
8. उपरिवत्, पृ० 49
9. भटनागर, आर० एन०, डॉ० अम्बेडकर जीवन और दर्शन, किताबघर, नई दिल्ली, 1990, पृ० 148
10. बाली, एल० आर० डॉ० अम्बेडकर जीवन और दर्शन, सुमत प्रकाशन, नागपुर, 1987, पृ० 169
11. उपरिवत्, पृ० 17
12. एल० आर० बाली, पूर्व उद्धृत, पृ० 92–93
13. भगवान दास, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर एक परिचय एक संदेश, पृ० 30
14. बाबा साहेब डॉ० अम्बेडकर : सम्पूर्ण वाङ्मय, खण्ड–9, पृ० 162–163
15. उपरिवत्, खण्ड 2, पृ० 211–212
16. उपरिवत्, पृ० 209
17. उपरिवत्, खण्ड 3, पृ० 284–285